Vol. 2 (Part-IV) No. XXV (2013-14)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2013 - MARCH 2014

56

कला और साहित्य में महिलाओं का योगदान

डॉ0 आभा सिंह
वरिष्ठ प्रवक्ता (राजनीति शास्त्र),
राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, नोएडा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
तत्रास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

किसी भी युग अथवा देश की सामाजिक व्यवस्था एवं उससे जुड़े दृष्टिकोण का वास्तविक मूल्यांकन वहां की स्त्रियों की दशा तथा स्त्रियों में प्रचलित धाराणाओं में माध्यम से होता है। वास्तव में किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति का मापदण्ड वहां की स्त्रियों की दशा से पता चलता है।

भारतीय समाज में सैदव ही नारी की स्थिति सम्मानजनक रही है। उसे शक्ति, सम्पत्ति एवं ज्ञान के प्रतीक स्वीकार करके दुर्गा, लक्ष्मी एवं सरस्वती के रूप में पूजा जाता रहा है। प्राचीन काल से ही नारी समाज का एक अभिन्न अंग है। अतीत से ही नारी का समाज में सर्वोच्च स्थान रहा है। यदि वैदिक कालीन स्त्रियों की स्थिति पर दृष्टि डाले तो हमें पता चलता है कि वे पुरूषों के समान अधिकार रचती रखती थी। वे शिक्षित थी तथा समाज में उन्हें सम्मान दिया जाता था। विश्वतारा, घोषा, सिकता, अपाला, उर्वशी आदि इस काल की महान् व विदुषी स्त्रियाँ थी।

आदि कवि वाल्मीकि ने रामायण में स्त्रियों का विशद् मिलता है। वाल्मीकि रामायण में नारी के स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण हैं। उन्होंने नारी को देवी रूप में अंकित किया है। पार्वती, सती, गंगा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि ऐसी ही अलौकिक नारियां है। इस युग में भी स्त्रियों को विशेष आदर व सम्मान दिया गया है। स्त्रियाँ रक्षणियाँ समझी जाती थी। वाल्मीकि युग में भी स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया है। इसी समय कौशल्या ने राम के राज्यभिषेक के समय मंत्रों से यज्ञ में आहुति दी थी। मन्दोदरी, तारा अत्यन्त निपुण राजनीति को जानने वाली स्त्रियाँ थी। अनुसूया परम विदुषी थी।

महाभारत काल में भी द्रौपदी, गांधारी, शकुन्तला, सावित्री जैसी अनेक आदर्श महिलाओं का जन्म हुआ है। इस समय भी नारी की दशा समाज में सन्तोषप्रद थी। माता को पृथ्वी के समान समझा जाता था। स्त्रियों को सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी। उन्हें वेदान्त शिक्षा, नृत्य, संगीत आदि सभी विषयों की शिक्षा मिलती थी। नारी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुये महात्मा विदुर का कथन है कि– "घर को उज्जवल करने वाली और पवित्र आचरण वाली महाभाग्यवती स्त्रियाँ पूजा सत्कार करने के योग्य है, क्योंकि वे घर की लक्ष्मी कहीं गयी है। अतः उनकी विशेषता से रक्षा करें।"

वैदिककाल के बाद में भारतीय समाज में